9 SEP 2019

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट-XVI/VIII (प्रश्नपत्र-2)

DTVF/19(N-M)-HL-**HL16/8**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): Ravi Kumar Sihag

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.): _____

ई-मेल पता (E-mail address): _____

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 08/09/19

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2019] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2019]:

1	1	1	1	7	6	2

विद्यार्थी के हस्ताक्षर
(Student's Signature): Ravi Sihag

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): _____ टिप्पणी (Remarks): _____

_____
मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

_____
पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

1. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का भी उद्घाटन कीजिये: 10 × 5 = 50

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(क) त्याग, तप, भिक्षा? बहुत हूँ जानता मैं भी, मगर,
त्याग, तप, भिक्षा, विरागी योगियों के धर्म हैं;
याकि उसकी नीति, जिसके हाथ में शायक नहीं;
या मृषा पाषण्ड यह उस कापुरुष बलहीन का,
जो सदा भयभीत रहता युद्ध से यह सोचकर
ग्लानिमय जीवन बहुत अच्छा, मरण अच्छा नहीं।

प्रस्तुत काव्यपंक्तियाँ राष्ट्रकवि 'रामधारी सिंह दिनकर' की विचारात्मक लंबी कविता 'कुरुक्षेत्र' से ली गई है।

पंक्तियों में दिनकर भीष्म पितामह के माध्यम से अन्याय के विरुद्ध त्याग, तप जैसे मूल्यों की प्रासंगिकता का परीक्षण करते हैं।

भीष्म युधिष्ठिर से कहते हैं कि ~~त~~ त्याग, तप, करुणा जैसे मूल्य उसी पर शोभित होते हैं, जो शक्तिशाली है, तलवार-युक्त है, बली है। अन्याय होने पर भी मूल्यों के आवरण में छिपकर जो

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

व्यक्ति युद्ध में अन्याय के विरुद्ध खड़ा नहीं होता, वह कायर है और भय-युक्त जीवन मरने के समान है।

काव्य सौन्दर्य

- भाषा - खड़ी बोली हिन्दी। (ओज गुण युक्त)
- रस - वीर रस
- लयात्मकता बनी हुई है।
- अलंकार = अनुप्रास की छटा दर्शनीय है।
- तत्सम बहुला भाषा का सौन्दर्य अनुपम है।

विशेष

दिनकर ने अपनी एक अन्य कविता में भी कहा है-
"क्षमा शोभती उस भुजंग को,
जिसके पास गरल है।"

- पंक्तियों में दिनकर का 'युद्ध दर्शन' वर्णित हुआ है।
- मार्क्सवादी प्रभाव नज़र आता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ख) निकल रही थी मर्मवेदना, करुणा विकल कहानी-सी,
वहाँ अकेली प्रकृति सुन रही, हँसती-सी पहचानी-सी।

प्रस्तुत पंक्तियाँ छायावाद के पुरोधा कवि 'जयशंकर प्रसाद' के आधुनिक महाकाव्य 'कामायनी' से उद्धृत हैं।

पंक्तियों में प्रलय के बाद चिंता सर्ग में मनु के प्रकृति के साथ साक्षात्कार का वर्णन किया गया है।

प्रसाद कहते हैं कि भीषण प्रलय के बाद जब मनु चिंता में डूबे होते हैं तो उनके हृदय में करुणा व मर्मवेदना निकल रही थी। अपने गत कर्मों के कारण मनु क्षोभ में थे। उसी क्षण में उन्हें प्रकृति नज़र आती है जो अत्यन्त सुंदर व मनोरम है और लग रहा है जैसे मनु को आशा व अग्रसर करने की प्रेरणा दे रही हो।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

काव्य सौन्दर्य

भाषा - खड़ी बोली हिन्दी

रस = शांत रस

अलंकार = मानवीकरण अलंकार (प्रकृति का मानवीकरण)

छंद = प्रसाद ने कामायनी में 16-16 मात्राओं की यति युक्त मौलिक छंद का प्रयोग किया है।

- तत्सम शब्दावली युक्त भाषा

विशेष

- छायावादी कविता का प्रकृति के निकट रहना सर्वविदित है। जैसे निराला के तुलसीदास को प्रकृति से प्रेरणा मिलती है, वैसा भाव यहाँ भी व्यंजित हो रहा है।

- इतिहास व मिथकों का प्रभाव कथा के सौन्दर्य को बढ़ा देता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ग) तुम सभ्य हो, 'मार्केट' जिनका सात सागर पार है,
पर ग्राम की वह हाट ही उनका 'बड़ा बाज़ार' है।
तुम हो विदेशों से मँगाते माल लाखों का यहाँ,
पर वे अकिंचन नमक-गुड़ ही मोल लेते हैं वहाँ।।

प्रस्तुत काव्यांश नवजागरण चेतना के पुरोधा कवि 'मैथिलीशरण गुप्त' की कालजयी कविता 'भारत-भारती' से लिया गया है।

पंक्तियों में गुप्त जी देश के उद्योग धंधों की दुर्दशा व केवल कच्चे माल के निर्यातक होने की दशा पर चिंता जाहिर करते हैं।

गुप्त जी कहते हैं कि अंग्रेजों के आगमन के पश्चात उद्योग-प्रधान देश भारत केवल कच्चा माल पैदा करने की भूमि रह गया है। समस्त उद्योग धंधे तो इंग्लैण्ड व विदेशों में स्थापित हैं जो यहाँ का कच्चा माल मंगवाकर भारत में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

निर्मित वस्तुओं का निर्यात करते हैं।

शिल्प सौन्दर्य

- भाषा - खड़ी बोली हिन्दी।
- छंद = हरिगीतिका
- भाषा में तत्सम (अकिंचन), तद्भव (नमक - गुड़, माल) एवं अंग्रेजी शब्दों (मार्केट) का प्रयोग भाषायी समन्वय का प्रतीक है।
- अलंकार = अनुप्रास (सात सागर)।

विशेष

- नवजागरण चेतना युक्त पंक्तियाँ।
- 'एक अन्य स्थान पर गुप्त जी ने कहा है- "जो देश कच्चा माल उत्पन्न करके ही शांत है पतन उसका एकांत है, सिद्धान्त यह निर्भ्रान्त है'

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) ऐसे क्षण अन्धकार घन में जैसे विद्युत
जागी पृथ्वी-तनया-कुमारिका-छवि, अच्युत
देखते हुए निष्पलक, याद आया उपवन
विदेह का,-प्रथम स्नेह का लतान्तराल मिलन
नयनों का-नयनों से गोपन-प्रिय सम्भाषण,-
पलकों का नव पलकों पर प्रथमोत्थान-पतन,-
काँपते हुए किसलय,-झरते पराग-समुदय,-
गाते खग-नव-जीवन-परिचय-तरु मलय-वलय,-
ज्योति:प्रपात स्वर्गीय,--ज्ञात छवि प्रथम स्वीय,-
जानकी-नयन-कमनीय प्रथम कम्पन तुरीय।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत काव्यपंक्तियाँ छायावाद के महाप्राण कवि 'सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला' की महान प्रबंधात्मक कविता राम की शक्ति पूजा' से ली गई हैं।

पंक्तियों में सुहेलपरांत सानू-सभा में राम के मन की स्मृतियों का वर्णन किया गया है।

सानू-सभा में संशयग्रस्त राम के मन में सीता की स्मृति आती है तो राम को जनक-वाटिका में सीता के साथ नयन मिलन एवं वहाँ पर विद्यमान प्रकृति

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

के विभिन्न पक्ष याद आते हैं। पुष्प, खग, जानकी के नयन राम को ऊर्जा देते हैं।

काव्य सौन्दर्य

भाषा - तत्सम बहुल खड़ी बोली हिन्दी

छंद - 8-8 मात्राओं की यति युक्त मौलिक लघवन्त छन्द जिसे 'शक्तिछंद' भी कहा जाता है।

रस = शृंगार रस।

अलंकार = अनुप्रास, मानवीकरण आदि
- 'पलकों का नव पलकों पर प्रथमोत्थान पतन।'

विशेष

- यहाँ राम ईश्वर नहीं बल्कि मानव रूप में आते हैं क्योंकि स्मृति में जाना मानव का लक्षण है।
- सीता की स्मृति के द्वारा राम का ऊर्जा-युक्त बनना निराला की नारी-मुक्ति की परिकल्पना का संदेश है।

कृपया इस
कुछ न लि
(Please do
anything

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) हाथ जिसके तू लगा,
पैर सर रखकर वो पीछे को भगा
औरत की जानिब मैदान यह छोड़कर,
तबेले को टट्टू जैसे तोड़कर,
शाहों, राजों, अमीरों का रहा प्यारा
तभी साधारणों से तू रहा न्यारा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत काव्यांश 'सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की प्रगतिवादी दौर (1942) में लिखी गई कविता 'कुकुरमुत्ता' से उद्धृत है।

काव्यांश में कुकुरमुत्ते व गुलाब के मध्य स्पर्द्धा व कुकुरमुत्ते द्वारा गुलाब पर आक्षेप किया जा रहा है।

कुकुरमुत्ता गुलाब के सौन्दर्य को पूंजीवादी सभ्यता का प्रतीक बताकर उस पर आक्षेप करता है कि वह असाधारण इसलिए है क्योंकि व शोषक वर्ग का प्रिय है एवं उसी का प्रतीक है। वह कहता है कि गुलाब शोषण का

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रतीक है जबकि कुकुरमुत्ता निचले वर्ग व समाज का प्रतीक है।

काव्य सौन्दर्य

- भाषा - खुरदरी खड़ी बोली हिन्दी
  - फारसी शब्द - औरत, जानिब, अमीर
  - देशी शब्द - टट्टू।
- लयात्मकता बनी हुई है किन्तु छंदों का बंधन टूट गया है।

विशेष

- डॉ॰ रामविलास शर्मा के अनुसार कुकुरमुत्ता कुंठित चरित्र है जो 'लुम्पेन सर्वहारा' का प्रतीक है।
- कविता में निराला ने प्रगतिवादी मूल्यों के साथ-साथ अन्य दर्शनों व विचारधाराओं पर व्यंग्य किया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) "नागार्जुन जनजीवन, धरती व मानव प्रेम के पुजारी हैं।" विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

बाबा नागार्जुन की कविता में प्रमुख विशेषता यह है कि ये कविताएँ काव्य-रसिकों व आभिजात्य वर्ग के लिये न होकर, आम जन-जीवन की चेतना से जुड़ी हुई हैं। नागार्जुन विचारधारा (मार्क्सवाद) का मोह छोड़कर केवल जनता, धरती व मानव प्रेम के पक्ष में काव्य रचना करते हैं।

"जनता मुझसे पूछ रही है।
क्या बतलाऊँ।,
जनकवि हूँ मैं साफ कहूँगा।
क्यों हकलाऊँ।"

जनजीवन पर चर्चा करें तो नागार्जुन की कविता 'अकाल और उसके बाद' ~~अकाल को चित्रित करता है~~, में अकाल के जनजीवन पर प्रभाव का वर्णन किया गया है। यहाँ पर जनजीवन में केवल मानव नहीं वरन, आचार्य रामचन्द्र

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

शुम्ल की भाषा में समस्त चराचर सृष्टि उनकी कविता का केन्द्रीय विषय है -

"कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानि कुतिया, सोई उसके पास।"

जनजीवन के संबंध में नागार्जुन ने जनसामान्य की तिक्त भावनाओं को भी उजागर किया है जहाँ एक ओर 'हरिजन-गाथा' में दलित वर्ग के शोषण के विरोध में वे कविताएँ लिखते हैं, वहीं दूसरी ओर राजनीति के जनविरोधी चित्रण व मिथ्या राष्ट्रवादी चेतना पर भी वे प्रहार करने से नहीं चूकते।

"जहाँ न भरता पेट,
देश वैसा भी हो महानरक है।"

दूसरे पक्ष में धरती के संबंध में नागार्जुन पारंपरिक जड़ मार्क्सवादियों के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

विपरीत प्रकृति के सौन्दर्य पक्ष का वस्तुनिष्ठ विवेचन करते हैं। वे मानते हैं कि जन सामान्य को गेंहूँ के साथ गुलाब की भी ज़रूरत है। 'बादल को घिरते देखा है' कविता में वे हिमालय के सौन्दर्य का वस्तुनिष्ठ वर्णन करते हैं-

"अमल-धवल गिरि के शिखरों पर
बादल को घिरते देखा है।"

इसी प्रकार किसान भाव से प्रकृति चित्रण में भी वे अद्वितीय हैं। भुट्टे, मटर आदि पर उनकी रचना अद्वितीय है-

"पके हुए दो भुट्टे सामने आए
तबियत खिल गई
ताजा स्वाद मिला दूधिया दानों का
तबीयत खिल गई।"

उपर्युक्त दोनों पक्षों के अलावा नागार्जुन की कविताएँ सामान्य नागरिकों

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

के दैनिक जीवन के दाम्पत्य प्रेम, पुत्री के प्रति वात्सल्य जैसे भावों को बड़ी सुंदरता से व्यक्त करती है-

"घोर निर्जन में परिस्थिति ने दिया है डाल,
याद आता है तुम्हारा सिंदूर तिलकित भाल।"
(प्रेम)

"प्राइवेट बस का ड्राइवर है तो क्या हुआ
सात साल की बेटी का पिता तो है
सामने काँच के ऊपर (वात्सल्य)
गियर पर लटका रखी है
काँच की चार चूड़ियाँ गुलाबी"

इस प्रकार 'नामवर सिंह' ने नागार्जुन को प्रकृति प्रेमी के साथ-साथ सच्चे अर्थों में आधुनिक भारत के जनकवि की संज्ञा दी है।

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।

(Please don't w anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'युद्ध और शांति की समस्या वास्तव में सामाजिक समता की समस्या है।'- कुरुक्षेत्र के आधार पर इस मत पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

कुरुक्षेत्र की रचना का समय विश्वयुद्धों का समय है। दिनकर ने कहा है कि- "पहले मुझे अशोक के निर्वेद ने आकर्षित किया फिर कलिंग विजय नामक कविता लिखते हुए मुझे लगा कि युद्ध की समस्या सारी समस्याओं की जड़ है।"

किन्तु दिनकर ने युद्ध को अन्याय व सामाजिक समस्या के रूप में चित्रित किया है एवं दिनकर के विचार भीष्म पितामह के माध्यम से व्यक्त हुए हैं।

दिनकर के समय की बात करें तो उस समय द्वितीय विश्वयुद्ध समाप्त हुआ था। द्वितीय विश्वयुद्ध की समस्या 'समता' की ही समस्या थी क्यों कि प्रथम विश्वयुद्ध के बाद 'वर्साय की संधि'

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

मैं जर्मनी के साथ असमान व्यवहार किया गया था। हिटलर का उद्देश्य इसी समानता की प्राप्ति करना था।

दिनकर ने भी युद्ध के पक्ष में यही विचार व्यक्त किये हैं कि -

"जब तक मनुज-मनुज का
यह सुख भाग नहीं सम होगा।"

~~क्षमित~~
शमित न होगा कोलाहल
रण नहीं कम होगा।"

यही भाव तत्कालीन 'स्वतंत्रता संघर्ष' के संबंध में है क्योंकि अंग्रेजों ने भारत को सामाजिक रूप से पंगु बना दिया था और इसी समानता को पाने की चाह स्वतंत्रता आंदोलन की थी। दिनकर ने इस संदर्भ में युद्ध को उचित बताया है -

दीनता हो स्वत्व कोई और तू
त्याग तप से काम ले यह पाप है,

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।

(Please don't w anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

"पुण्य है विच्छिन्न कर देना उसे,
तेरी तरफ बढ़ रहा जो हाथ है।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

शांति के संबंध में भी दिनकर का विचार है कि पूंजीवादी व्यवस्था में शांति शोषण की व्यवस्था पर टिकी है जो कि वंचित वर्ग में विद्रोही चेतना के अभाव का परिणाम है-

"धर्म निंदय है धर्मराज पर कहो शांति वह क्या है
जो अनीति पर स्थिर होकर भी बनी हुई सरला है।"

इस प्रकार दिनकर के अनुसार युद्ध व शांति सामाजिक अन्याय के परिणाम है। मार्क्सवादी विचारों से प्रभावित दिनकर ने अन्त में युद्ध की समाप्ती के संबंध में कहा भी है-

"शांति नहीं तब तक जब तक
सुख भाग न नर का सम हो,
न ही किसी को बहुत अधिक हो
न ही किसी को बहुत कम हो।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) संवदेना के धरातल पर 'भारत-भारती' की सीमाओं को रेखांकित कीजिये। 15

मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'भारत-भारती' नवजागरण चेतना से ओतप्रोत काव्य है जहाँ उन्होंने भूतकाल, वर्तमान काल व भविष्य काल का भारत के सन्दर्भ में विवेचन कर अतीत की भव्यता, वर्तमान की दुर्दशा व भविष्य के स्वप्न संजोये हैं। किन्तु इस विवेचन के बाद भी भारत-भारती की महत्ता निरापद नहीं है।

आलोचकों के अनुसार गुप्त जी ने अंग्रेजों की पर्याप्त आलोचना की है किन्तु भारत की गरीबी व आर्थिक विषमता के पीछे अंग्रेजी नीतियों को जिम्मेदार नहीं ठहराया है।

दूसरे स्तर पर उनकी आलोचना यह है कि उन्होंने तत्कालीन राष्ट्रीय आंदोलन, कांग्रेस आदि का विवेचन भी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

नहीं किया है। हालांकि एम. श्रीनिवासन जैसे समाजशास्त्रियों ने कहा है कि - 'यह दुरंगापन तत्कालीन बुद्धिजीवियों की रणनीति थी। एक ओर गुप्त जी 'कंट्रास्ट' पैदा करना चाहते थे तो दूसरी ओर रचना को प्रतिबंध से बचाना चाहते थे।

अन्य स्तर पर गुप्त जी के वैष्णव विचार भारत के अन्य धर्मों जैसे इस्लाम व बौद्ध धर्म पर भारी पड़ते हैं। ~~गुप्त~~ गुप्त जी ~~कि~~ की हिन्दू केन्द्रीयता व आर्य केन्द्रीयता दक्षिण व उत्तर-पूर्व भारत को जुड़ने नहीं देती। इस्लाम पर आक्रमण पर उन्होंने कहा है कि -

"हैं निष्ठुरों के हाथ से सुरमूर्तियाँ खंडित हुईं
बहु मंदिरों की वस्तुओं से मस्जिदें मंडित हुईं।"

किन्तु यहाँ पर भी ~~गुप्त~~ गुप्त जी अन्त में हिल-मिलकर चलने की बात कहकर

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

समन्वय स्थापित करने का प्रयास करते हैं।

तीसरे स्तर पर सामाजिक समस्याओं का पर्याप्त विवेचन नहीं किया गया है। जाति व्यवस्था पर अत्यन्त थोड़ा कटाक्ष है जबकि नारी को स्वतंत्र व्यक्तित्व भी प्रदान नहीं किया गया है -

"पूजन ~~करो~~ किया पतियों का भक्तिपूर्ण विधान से,
अंचल पसार कर प्रणाम कर, फिर की विनय भगवान से।"

अन्त में आलोचक गुप्त जी की रचना को रोमानीयत से ग्रसित बताते हैं। शमशेर बहादुर सिंह ने ऐसे ही आक्षेप किये हैं।

फिर भी तत्कालीन समाज को जागृत करने, राष्ट्रप्रेम जगाने में भारत-भारती रचना अद्वितीय है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) 'सूर का भ्रमरगीत नागर-संस्कृति के बरक्श लोक-संस्कृति की प्रतिष्ठा करता है।' इस कथन पर विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

भ्रमरगीत की परंपरा भागवत से लेकर कालिदास के काव्य से होते हुए सूर, नंददास व आधुनिक समय में गुप्त जी तक फैली हुई है, किन्तु सूर के भ्रमरगीत में सूर की मौलिक उद्भावना यह है कि उन्होंने यहाँ पर गोपी व उद्धव संवाद के द्वारा लोक-संस्कृति की नगरीय संस्कृति पर विजय दर्शायी गई है।

प्रथम स्तर पर भ्रमरगीत में गोपियों ने मथुरा नगर पर सीधे कटाक्ष किया है कि वहाँ के लोगों का हृदय कालिख-युक्त होता है और वहाँ के लोग आकर श्रीकृष्ण को ले गये हैं-

"वह मथुरा काजर की कोठरी
जे आवहि ते कारे
तुम कारे, सुफलकसुत कारे
कारे मधुर भँवारे।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दूसरे स्तर पर भ्रमरगीत में यह विवेचित हुआ है कि नगर के लोग अधिक शिक्षित होकर बुद्धि पक्ष को प्रधानता देते हैं। उद्धव को ज्ञान व योग मार्ग का अनुयायी बताया जाना व ग्रामीण अशिक्षित गोपियों के भावनायुक्त तर्कों से शहरी उद्धव की पराजय लोक-संस्कृति की प्रतिष्ठा स्थापित करती है –

"निर्गुन कौन देस को बासी
को है जनक, जननि को कहियत।
कौन नारी को दासी।"

(~~निर्गुण~~ उद्धव पर कटाक्ष)

"अब अति पंगु भयो मन मेरो
गयो तहाँ निर्गुन कहिबे को
भयो सगुन को चेरो।"

(उद्धव का हार मानना)

अन्य स्तर पर सूर के शहरी जीवन में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

राजनीति व छल-कपट पर कटाक्ष किया है। गोपियाँ कहती हैं कि ग्रामीण कृष्ण शहर में जाने के बाद राजनीति सीख छल-कपट करने लगे हैं-

"हरि हैं राजनीति पढ़ि आए
इक अति चतुर हुते पहले ही
अब गुरु ग्रंथ पढ़ाए।"

किन्तु शहर के बजाय ग्रामीण संस्कृति छल-कपट नहीं बल्कि प्रेम संबंधों पर आधारित है जहाँ प्रेम करने को ही साध्य समझा जाता है। गोपियों के मन में श्रीकृष्ण का प्रेम तिरछे होकर ऐसा फंसा है कि वह निकल नहीं सकता।

"उर में माखन चोर गड़े
अब कैसेहूँ निकसत नाहिं
तिरछे ह्वै ज्यूँ अड़े।"

इस प्रकार जहाँ संपूर्ण भक्ति आंदोलन में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

ग्रामीण जीवन व प्रेम भावना की महत्ता प्रतिपादित की गई है। कबीर ने भी 'पोथियों के ज्ञान' से बड़ा 'ढाई आखर के प्रेम' को बताया था, तो सूर ने भी शहरी जीवन, शहरी ज्ञान व संस्कृति के समक्ष ग्रामीण प्रेम, भावना, संस्कृति को विजयी बनाकर लोक-संस्कृति की महत्ता व प्रतिष्ठा स्थापित की है।

कृपया इस स्थान
कुछ न लिखें।

(Please don't w
anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'प्रगतिवादी जीवनमूल्यों में आस्था रखते हुए भी मुक्तिबोध 'लकीर के फकीर' नहीं हैं और अनुभवजन्य यथार्थ पर अधिक यकीन रखते हैं।' ब्रह्मराक्षस कविता के संदर्भ में इस कथन पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मुक्तिबोध मार्क्सवादी विचारधारा के कवि हैं। उनकी हर कविता में उन्होंने वर्ग संघर्ष की रचना की है तो पूंजीवादी व्यवस्था के मूल्यों पर कटाक्ष करने से भी वे चूके नहीं है। 'चाँद का मुंह टेढ़ा है', अंधेरे में' जैसी कविताएँ मार्क्सवादी मूल्यों पर रहकर क्रान्ति का आह्वान करती है-

" कहीं आग लग गई
कहीं गोली चल गई।"

किन्तु मुक्तिबोध जड़ मार्क्सवादी नहीं है। मार्क्सवाद में एक परिकल्पना है जिसमें मार्क्स ने 'मध्यमवर्गीय बुद्धिजीवी का उत्तर-दायित्व' तय किया है। इसके अनुसार इनका दायित्व है कि वे निम्न वर्ग में शोषण के प्रति चेतना भरकर क्रान्ति का

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

मार्ग प्रशस्त करें। यही समस्या 'ब्रह्म-राक्षस' कहानी की है जिसमें ब्रह्मराक्षस आत्मचेतस व विश्वचेतस के अन्तर्द्वन्द्व से ग्रस्त है और शत प्रतिशत विश्वचेतस होना चाहता है -

"आत्मचेतस- किन्तु इस ज्ञानमय व्यक्तित्व में भी अनबन विश्वचेतस बनाव।"

किन्तु इस असंभव कार्य को पूर्ण करने के प्रयासों में वह कोठरी में अपना गणित करता हुआ मर जाता है।

मुक्तिबोध इस संकल्पना में संशोधन कर 'व्यक्तित्व' व भावना को महत्व देता है। वे मानते हैं कि क्रान्ति के लिये व्यक्तित्व भी ज़रूरी है और व्यक्तित्व को पूर्णतः विलयित किया ही नहीं जा सकता। अतः व्यक्ति को अपनी भावनाओं से ऊर्जा ग्रहण कर दायित्व निर्वहन करना

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।

(Please don't wr anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

चाहिये। वे सजल उर शिष्य के माध्यम से यही प्रस्तावना करते हैं-

"मैं ब्रह्मराक्षस का सजल उर शिष्य होना चाहता,
ताकि उसकी वेदना का स्रोत xxx
संघर्ष पूर्ण निष्कर्षों तलक,
पहुँचा सकूँ।"

इसी प्रकार अन्य स्तरों पर मुक्तिबोध ब्रह्मराक्षस की भावनाओं का महत्व बताते हैं-
"उस आंतरिकता का बताता मैं महत्व।"

इस प्रकार इस कविता में मुक्तिबोध ने जड़ मार्क्सवाद को त्यागकर विचारधारा में आनुभविक संशोधन किया है। जैसा कि 'ब्रह्मराक्षस' कविता में एक जगह लिखा भी है-

"कि मार्क्स एंजेल्स रसेल टायनबी xxx
सभी के सिद्ध-अन्तों' का
नया व्याख्यान करता वह।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) जिंदगी का अभाव और संघर्ष ही नागार्जुन के काव्य-संसार की जलवायु है और विक्षोभ उनकी कविता का केंद्रीय स्वर।' इस कथन के आलोक में नागार्जुन के काव्य-कर्म पर विचार कीजिये। 15

नागार्जुन का काव्य संसार विविधता लिये हुए है। जहाँ एक ओर वे जनता की मधुर प्रेम भावनाओं का वर्णन अपनी कविताओं में करते हैं तो दूसरी ओर जिंदगी के अभाव, संघर्ष व विक्षोभ को भी कविताओं की विषयवस्तु में उतारते हैं।

जिंदगी के अभाव व संघर्ष में नागार्जुन ने जनता के जीवन में जो है' और 'जो होना चाहिये' के बीच का अंतराल पाटने की कोशिश अपनी कविता के जरिये की है। अकाल और उसके बाद कविता में कवि ने अकाल की दारुण स्थितियों का वर्णन किया है तो हरिजन-गाथा में उन्होंने दलितों के जीवनाभाव व व्यथा का चित्रण किया है-

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

"कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास,
कई दिनों तक कानी कुतिया, सोई उसके पास।

• "ऐसा तो कभी नहीं हुआ था
एक नहीं, दो नहीं, तीन नहीं,
तेरह के तेरह अभागे
अकिंचन दरिद्र मनुपुत्र
जिंदा झोंक दिये गये हों
साधन सम्पन्न ऊँची जाति वाले
सौ-सौ मनुपुत्रों द्वारा।"

(हरिजन-गाथा)

संघर्ष की अभिव्यक्ति में उनकी कविता हरिजनगाथा में उन्होंने क्रान्ति की अभिव्यक्ति भी दी है-

"सौ-सौ मजदूरों के बीच पलेगा
आज यही संपूर्ण क्रान्ति का
बेड़ा सचमुच पार करेगा।"

नागार्जुन की कविता विक्षोभ को भी केन्द्रीय स्वर के रूप में धारण करती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

वे लिखते हैं-

"रोना हूँ, लिखता जाता हूँ,
कवि को बेकाबू पाता हूँ।"

यही रुदन जब जनता की समस्याओं से रू-ब-रू होता है तो विक्षोभ में बदल जाता है और नागार्जुन अपनी कविताओं में तीव्र व्यंग्य करते हैं।

"प्रतिहिंसा ही स्थायी भाव है मेरे कवि का
जन-जन में जो ऊर्जा भरदे
मैं उद्गाता हूँ उस रवि का।"

यही प्रतिहिंसा नागार्जुन को प्रेरित करती है कि वे जन-हित में सामाजिक-राजनीतिक व आर्थिक अन्याय के विरुद्ध विक्षोभपूर्ण कविताएँ लिखें।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) पदमावत में लोकसंस्कृति की अभिव्यक्ति है, सोदाहरण स्पष्ट कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का भी उद्‌घाटन कीजिये : 10 × 5 = 50

(क) प्रमाण! प्रमाण अभी खोजना है? आँधी आने के पहले आकाश जिस तरह स्तम्भित हो रहता है, बिजली गिरने से पूर्व जिस प्रकार नील कादम्बिनी का मनोहर आवरण महाशून्य पर चढ़ जाता है, क्या वैसी ही दशा गुप्तसाम्राज्य की नहीं है?

प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी नाटक परंपरा के केन्द्रीय नाटककार 'जयशंकर प्रसाद' के राष्ट्रीय चेतना युक्त ऐतिहासिक नाटक 'स्कंदगुप्त' से लिया गया है।

पंक्तियों में सेनापति पर्णदत्त स्कंदगुप्त को गुप्त साम्राज्य की दुर्दशा के प्रमाणों के बारे में बता रहे हैं।

पर्णदत्त कहता है कि गुप्त साम्राज्य के शासकों की अकर्मण्यता व विलास-प्रियता के कारण यह साम्राज्य पतन की ओर है। हूणों के आक्रमण को बिजली गिरने के समान बताकर वह साम्राज्य के आगामी खतरों के

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रति आगाह करते हुए स्कंदगुप्त को साम्राज्य की स्थिति के प्रमाण भी बताता है।

शिल्प सौन्दर्य

① भाषा :- तत्सम बहुला भाषा जिसमें लाक्षणिकता बनी हुई है।

② सहजवाचक शैली का प्रयोग - 'प्रमाण ? प्रमाण अभी खोजना है।'

③ द्वितीय पंक्ति में अप्रस्तुत विधान अनुपम है।

④ विराम चिह्नों का सुंदर प्रयोग।

विशेष :-

- प्रमाण के सन्दर्भ में संस्कृत में भी उक्ति है - 'प्रत्यक्षं किम् प्रमाणम्'

- स्कंदगुप्त के माध्यम से प्रसाद ने अपने दर्शन के साथ राष्ट्रीय - सांस्कृतिक चेतना जगाने का सुंदर प्रयास किया है।

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't wr anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) दुनिया में यह सब तो चलता ही रहता है, तुम अकेली कहाँ तक लड़ोगी?..... किसी चीज से अगर सचमुच प्यार हो या वह कीमती हो तो टूट-फूट जाने पर भी उसका मोह नहीं जाता।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत पंक्तियाँ राजेन्द्र यादव द्वारा संकलित कहानी संग्रह 'एक दुनिया: समानान्तर' में 'ज्ञानी' द्वारा रचित कहानी 'एक नाव के यात्री' से ली गई हैं।

पंक्तियों में कीर्ति की मां मिसेज मित्तल को पुरुष की के समक्ष स्त्री की स्थिति का वर्णन कर उसे अवास्थिति अपनाने की सलाह देती है।

कीर्ति की मां कहती है कि पुरुष और नारी के संबंधों में नारी को अधीनस्थ रहना चाहिये, विरोध नहीं करना चाहिये। किसी विवाद या मतभिन्नता में भी नारी को सिर झुकाकर विवाद को सुलझाना चाहिये।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

शिल्प सौन्दर्य

1. सरलवाचक शैली ने संवादों की रोचकता में वृद्धि की है।

2. संवाद छोटे चुस्त व कथा के उद्घाटन में सहायक है।

3. 'दुनिया में सब तो चलता ही रहता है' जैसे वाक्यों से यथास्थिति का बोध होता है।

विशेष :- प्रस्तुत कहानी में शानी ने माता-पिता व संतान के संबंधों पर विचार किया है जो नई कहानी की संवेदना से थोड़ा अलग हटकर है।

- पंक्तियों में महिलाओं में विद्यमान पितृसत्तात्मकता के मूल्यों का उद्घाटन किया गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) एक चीज थी जिसे तुम नष्ट कर देना चाहते थे और वह नष्ट हुई, यह प्रमाणित करते हुए कि वह है। मैं जानती हूँ, कि वह है और दो बार तुम उस पर आक्रमण कर चुके हो और वह उन्हें बचा गया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत गद्यांश एक दुनिया : समानान्तर कहानी संग्रह की कहानी 'विजेता' से लिया गया है। इस कहानी के रचनाकार 'अशोक वाजपेयी' हैं।

पंक्तियों में कामिनी द्वारा उसके पति को गर्भपात के मुद्दे पर समझाया जाता है। क्योंकि दोनों ने गर्भपात का प्रयास दो बार किया था किन्तु फिर भी शिशु बच गया।

पंक्तियों में कामिनी कहती है कि दो प्रयासों के बाद भी यदि यह बच्चा सुरक्षित है तो इसका अर्थ है कि यह जीना चाहता है। यह इस बच्चे की जिजीविषा है कि वह इन भयंकर आक्रमणों में भी अक्षत रहा है। अतः अब इन्हें गर्भपात करने के प्रयासों

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

को छोड़ देना चाहिये।

विश्लेषण

- कहानी उस दौर की है जब गर्भपात वैध नहीं था। अतः पति-पत्नी द्वारा अपनी संतान के गर्भपात के अवैध व निर्मम तरीकों का प्रयोग किया जाता है।
- कहानी का शीर्षक विजेता अत्यन्त सटीक है जो उस गर्भस्थ शिशु की विरोधी शक्ति का प्रतीक है।

प्रासंगिकता

- कन्या भ्रूण हत्या के मुद्दे व घटते लिंगानुपात के संदर्भ में कहानी आज भी प्रासंगिक है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) मैं खुद अपने आगे खड़ा हूँ, मान्यताओं की सलीब पर टँगा हुआ, लहूलुहान!.... पत्थर का एक बहुत बड़ा ढ़ेर है और लोग आँखें मूँदकर पत्थर मारते हैं.... लोग फूल चढ़ा रहे हैं मान्यताओं पर..... आदमी को बार-बार की नोची-छिछड़ी को दाँतों से नोंच-नोंचकर फेंक रहे हैं.... लोग नंगी औरत के कोमल शरीर को खुरदरे जूट के रस्सों से जकड़कर बाँध रहे हैं..... सिर्फ एक लाचारी का आरोप..... आदमी नहीं, टूटा हुआ, पुराना खण्डहर..... आखिर क्यों?

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत गद्यावतरण नयी कहानी के दौर में 'मार्कण्डेय' द्वारा रचित कहानी 'दूध और दवा' से लिया गया है।

पंक्तियों में रचनाकार द्वारा साहित्यकार की कला व उसकी आर्थिक लाचारियों के मध्य द्वन्द्व को चित्रित किया गया है।

पंक्तियों में वर्णित किया गया है कि किस प्रकार आर्थिक समस्याएँ व पारिवारिक मजबूरियाँ किसी रचनाकार को असहाय बना देती है। विभिन्न प्रतीकों के माध्यम से रचनाकार के प्रतिरोधी मन व मुसीबतों के आगमन का सुंदर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

वर्णन कहानीकार ने किया है।

शिल्प सौन्दर्य

1. भाषा जटिल, सतीकयुक्त है जो अर्थ-बोधन की दृष्टि से कठिन है।
2. वाक्य - विराम चिह्नों, विस्मयादि बोधक के कुशल प्रयोग ने गद्य में कविता का प्रभाव उत्पन्न किया है।
3. पूरी पंक्ति में अप्रस्तुत विधान अत्यन्त अनुपम है।
4. शब्दों के स्तर पर तत्सम, तद्भव व देशज शब्दों का खुला निमंत्रण है।

विशेष व प्रासंगिकता - आज भी हमारे यहाँ अच्छे कलाकारी इसलिए अधिक नहीं है क्योंकि कला सृजन आर्थिक रूप से लाभकारी नहीं है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) दोपहर की उस घड़ी में मीडोज अलसाया-सा उँघता जान पड़ता था। जब हवा का कोई भूला-भटका झोंका आ जाता था, तब चीड़ के पत्ते खड़खड़ा उठते थे। कभी कोई पक्षी अपनी सुस्ती मिटाने झाड़ियों से उड़कर नाले के किनारे बैठ जाता था, पानी में सिर डुबोता था, फिर उड़कर हवा में दो चार निरुद्देश्य चक्कर काटकर दुबारा झाड़ियों में दुबक जाता था।

किन्तु जंगल की खामोशी शायद कभी चुप नहीं रहती। गहरी नींद में डूबी सपनों-सी कुछ आवाजें नीरवता के हल्के झीने परदे पर सलवटें बिछा जाती हैं, मूक लहरों-सी तिरती हैं, मानो कोई दबे पाँव झाँककर अदृश्य संकेत कर जाता है, 'देखो, मैं यहाँ हूँ।'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत पंक्तियाँ नयी कहानी के दौर की प्रथम कहानी 'परिन्दे' से ली गई हैं। इस कहानी के कहानीकार 'निर्मल वर्मा' हैं।

पंक्तियों में छात्रावास के आसपास के वातावरण का वर्णन किया गया है।

पंक्तियों में वातावरण में निर्मित खामोशी को पात्रों के मन से जोड़कर वर्णन किया गया है कि कहानी के सभी पात्र -लतिका, मि. हुबर्ट, डॉ. मुखर्जी आदि सभी उदासीन हैं। सभी एक प्रकार से उस वातावरण में अपनी मृत्यु का इंतजार करते हुए से प्रतीत

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

होते हैं।

शिल्प सौन्दर्य

- भाषा - तत्सम व तद्भव शब्दावली युक्त समन्वयात्मक भाषा।
- अप्रस्तुत विधान :- उड़ते पक्षी पात्रों के मन के प्रतीक हैं जो निरुद्देश्य फड़फड़ा रहे हैं।
- चित्र लयात्मकता का अभाव है
- देशकाल व वातावरण सघन है।
- वातावरण प्रधान कहानी कहा जा सकता है।
- बिम्बों की सृजना हो रही है।

विश्लेषण

- पंक्तियाँ जीवन की उद्देश्यहीनता को व्यंजित कर रही हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) कथा के धरातल पर ऐतिहासिक होते हुए भी स्कंदगुप्त क्यों एक आधुनिक नाटक है? तार्किक उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) गुलाबराय के निबंध भारतीय संस्कृति के प्रतिपाद्य का उद्घाटन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गुलाबराय शुक्ल पूर्व एवं शुक्ल जी के समय के प्रख्यात निबंधकार हैं। इनके प्रमुख निबंध - 'ढलुआ रूलब', 'मेरी असफलताएँ', 'कुछ उथले - कुछ गहरे', 'फिर उदास क्यों' आदि हैं।

इनके द्वारा रचित निबंध भारतीय संस्कृति में इन्होंने भारतीय संस्कृति के संपूर्ण आंतरिक व बाह्य पक्षों का विवेचन किया है व अन्य संस्कृतियों से तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

निबंध की शुरुआत वे संस्कृति शब्द की व्याख्या से करते हैं -

'संस्कृति शब्द अंग्रेजी के 'कल्चर' धातु से बना है और संस्कृत के 'संस्कार' शब्द से जिसका अर्थ होता है - संशोधित करना या परिमार्जित करना। संस्कार व्यक्ति के भी होते हैं और

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जाति के भी। जातीय संस्कारों के योग का नाम ही संस्कृति है।"

इसके बाद के स्तरों में वे संस्कृति के बाह्य व आंतरिक पक्षों की विवेचना करते हैं।

बाह्य पक्षों के अन्तर्गत वे भाषा, खान-पान, रहन-सहन का अध्ययन करते हैं जिसमें भाषा संबंधी पक्ष महत्वपूर्ण है। उनके अनुसार भारतीय जलवायु ऊष्ण है अत: यहाँ 'हव्य को शीतल करना' मुहावरा है जबकि पश्चिमी शीत जलवायु में 'वॉर्म रिसेप्शन' मुहावरा है।

इसी प्रकार भारतीयों की स्नान परंपरा, जमीन पर बैठकर खाने की परंपरा को भी वे वैज्ञानिक तरीके से समझाते हैं।

इसके बाद वे आंतरिक पक्षों में भारतीय संस्कृति की निम्न विशेषताएँ बताते हैं-

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(क) वर्णाश्रम धर्म ।
(ख) समन्वय चेतना ।
(ग) करुणा, दया व उदारता ।
(घ) प्रकृति प्रेम ।
(ङ) अहिंसा ।

आंतरिक पक्षों के विवेचन में वे भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठता को अन्य संस्कृतियों के सापेक्ष सिद्ध करते हैं।

निबंध के अन्त में वे भारतीय संस्कृति पर अन्य संस्कृतियों के प्रभाव की आलोचना करते हैं। उनके अनुसार भारतीय मूल्य श्रेष्ठ हैं और पश्चिमी मूल्यों को अपनाया जाना 'आत्महत्या होगी।'

इसी क्रम में अन्य धर्मों के संबंध में भी वे अधिक प्रसन्न दिखाई नहीं देते हैं व भारतीय धर्मों को अन्य धर्मों पर वरीयता देते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

समन्वयवादी होने के कारण वे अन्तत: अन्य संस्कृतियों के अच्छे विचारों को अपनाने की भी बात करते हैं जैसे - 'पश्चिमी संस्कृति से समय पाबंदी व स्वच्छता का गुण अपनाना।

अत: अपनी संपूर्ण संवेदना में यह निबंध संस्कृति के संपूर्ण पक्षों को उजागर करता है व भारतीय संस्कृति की महानता को प्रतिपादित करता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

इस स्थान में ... लिखें। ... don't write ... g in this space

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'भारत-दुर्दशा' नाटक में तत्कालीन समाज का जो प्रतिबिंबन हुआ है, वह आज कहाँ तक प्रासंगिक है? युक्तियुक्त विवेचना कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

उपयोगितावादी नज़रिये से लिखा गया नाटक 'भारत-दुर्दशा' तत्कालीन जन-मानस की विकट स्थितियों का वर्णन करता है। यह भारतेन्दु की भविष्य-दृष्टि ही है जो ये समस्याएँ आज भी प्रासंगिक हैं।

भारतेन्दु ने सर्वप्रथम धर्म की भूमिका को उजागर किया है कि धर्म व संप्रदायों की बहुलता ने जाति व्यवस्था, छुआछूत व ऊँच-नीच को जन्म दिया।

"शैव, शाक्त वैष्णव, अनेक मत प्रगटि चलाये
जाति अनेकन करि, नीच अरु ऊँच बनाये।"

आज भी भारत में सांप्रदायिकता की समस्या चरम पर है। हालिया मुजफ्फरनगर दंगे इसका प्रमाण है। इसके अलावा छुआछूत व दलितों के उत्पीड़न की घटनाएँ हर-रोज अखबारों में मिल ही जाती हैं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

दूसरे स्तर पर भारतेन्दु ने अंग्रेजों पर राजनीतिक व्यंग्य किये हैं वे समस्याएँ भले ही वैसे रूप में हमारे यहाँ न हो किन्तु राजनीति का अपराधीकरण, संवेदनहीनता आज भी विराजमान है जो जनता का उत्पीड़न करती है।

बुद्धिजीवी वर्ग की तटस्थता व विद्रोह हीनता का वर्णन जो भारतेन्दु ने पाँचवे अंक में किया है; आज के मीडिया का बिकाऊ होना, जनसामान्य के प्रति लगाव का अभाव व आज के बुद्धिजीवी वर्ग की निष्क्रियता इसी बात को स्थापित करती है।

पहला देशी का कथन - "यह कोई नहीं कहता कि सब लोग मिलकर एकचित्त हो, कल-कारखाने खोलो, तब वास्तविक कुछ उन्नति होगी।" आज भी प्रासंगिक है क्योंकि जहाँ उस समय देश में उद्योगों की कमी थी, कुछ वैसी ही स्थितियाँ आज के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

भारत में भी है। 'मेक इन इंडिया' जैसे कार्यक्रम पहले देशी के वाक्य का ही दूसरा रूप है।

इसके अलावा अन्य समस्याएँ यथा- गरीबी, आलस्य, अज्ञानता, कायरता, फैशनपरस्ती, भ्रष्टाचार आदि भी आज के भारत में ज्यों की त्यों है। देश आज भी औपनिवेशिक मानसिकता से उबर नहीं पाया है।

अतः अन्ततः इस विवेचना से कहा जा सकता है कि तत्कालीन समाज का प्रतिबिंब आज के समाज की झलक देता है और आज भी अनेक अर्थों में प्रासंगिक है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) दलित-विमर्श के परिप्रेक्ष्य में प्रेमचंद के उपन्यास 'गोदान' का अनुशीलन कीजिये। 15

कोई भी रचना एक समय से जुड़ी नहीं रहना चाहती। महान रचना वह होती है जो समय के साथ-साथ नये अर्थों की अवतारणा करे व नयी विचारधाराओं के सापेक्ष अपनी सार्थकता सिद्ध करे। दलित-विमर्श के सापेक्ष गोदान का परीक्षण करने पर निम्न निष्कर्ष मिलते हैं-

(क) दलित समीक्षकों ने प्रेमचन्द पर दलित विरोधी होने का आरोप लगाया है। उन्होंने कहा है कि प्रेमचन्द बच्चों के संबंध में भी जाति-व्यवस्था को बढ़ावा देते हैं। उदाहरण के लिये-

"रूपा ने अंगुली मटकाते हुए कहा - ऐ राम! सोना चमार।"

(ख) दूसरे स्तर पर इनका आक्षेप है कि प्रेमचन्द ने दलितों के बारे में विरोधी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

बातें पात्रों से कहलवाई है। जैसे - पंडित दातादीन कहते हैं -

"इन नीची जात वालों का भरोसा नहीं। भर पेट खाना खाया कि टेढ़े चले। सच कहा है - नीच जात लतियाए अच्छा।"

किन्तु इन सभी आक्षेपों में सच्चाई नहीं है। प्रथम स्तर पर रूपा व सोना के माध्यम से प्रेमचन्द यह बताते हैं कि सामाजीकरण की प्रक्रिया में बच्चों में किस प्रकार जाति-व्यवस्था घर कर जाती है।

दूसरे स्तर पर प्रेमचन्द ने पं. दातादीन के मुंह से बातें कहलवाकर बताया है कि किस प्रकार ब्राह्मणवादी व्यवस्था में उच्च जातियों द्वारा निम्न जातियों के प्रति पूर्वाग्रह बनाये जाते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

अंतिम पक्ष में प्रेमचन्द ने अपनी प्रगतिशीलता का निर्वहन सिलिया के परिवार की विद्रोही चेतना; मातादीन व सिलिया के विवाह प्रसंग में दी है। प्रेमचन्द उच्च जाति को चेतावनी देते हैं कि अगर वे नहीं सुधरे तो दलित वर्गों का विद्रोह झेलना पड़ेगा।

इस प्रकार 'गोदान' दलित-विमर्श के संबंध में भी पर्याप्त प्रगतिशीलता का परिचय देकर अपनी सार्थकता सिद्ध करता है।

कृपया इस स्थान
कुछ न लिखें।
(Please don't wr
anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundation